क्षुधा

क्षुधा
अग्नि देव का वंशज हूँ
गुण धर्म और
गति मत्ति से ।

देवत्व का आग्रह नहीं करता
देवत्व का शतांश भी नहीं मुझमें
किन्तु सभ्यता का उत्प्रेरक हूँ ।

क्षुधा

अग्नि देव का वंशज हूँ
सर्वव्यापकता मेरा गुण है
नकारात्मक उत्साहवर्द्धक ही सही
रूप अवस्था अनुभूति भिन्न हैं
देश काल की सीमा से मुक्त
मानों न मानो
मार्क्स की लेखनी का स्याही हूँ ।

क्षुधा
अग्नि देव का वंशज हूँ ।
है । अपराध साहित्य विशेषज्ञों
मनुपुत्रों ।

तुम मुझे पहचानो
मैं विकल हूँ उचित स्थान पाने को
स्थान दो, दुत्कारो मत ।

– गंगेश्वर सिंह